25 राजस्थान की लोक सांस्कृतिक परम्परा में शक्ति पूजा लोक देवियों के रूप में: करणी माता के विशेष सदर्भ में

डॉ. राकेश कुमार धाबाई*
सहायक आचार्य, एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर।
*Corresponding Author: rakeshdhabai78@gmail.com

सार

राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा में शक्ति पूजा की परम्परा काफी पुरानी है। इसी परम्परा बांसवाड़ा में त्रिपुरसुन्दरी का मंदिर पुराना है। इसी प्रकार जयपुर के राजवंश की आराध्य शक्ति दुर्ग आमेर में शिलादेवी के रूप में पूजित है। करौली में केलादेवी, जोधपुर में नागणेची, बीकानेर में करणीमाता, सीकर की जीणमाता, लोहार्गल की सिकराय माता, ओसियां की पीपाड़माता, जैसलमेर की तन्नौट माता, आदि शक्तियाँ है जो मूलतः लोक देवियाँ रही है और अब दुर्गा के रूप में पूजी जाती है तथा लाखों की आराध्य है।

शब्दकोशः आराध्य देवी, कुल देवी, पुरातन परम्परा, अवतार, जंवारे, लोक आस्था, सौहार्द, लोक देवी, राजपूताना, मारवाड़, आराध्य देवी, कुल देवी, काबा, मंड, देशनोक, सुवाप गाँव, चारण, ओरण, बारीदारी, देपावत।

प्रस्तावना

राजस्थान की लोक सांस्कृतिक परम्परा काफी सम्पन्न है जिसमें राजस्थानी लोक देवता तथा देवियों का विशेष महत्व है। लोक देवियों का न केवल धार्मिक महत्व है अपितु धार्मिक तथा सांस्कृतिक समरसता स्थापित करना एवं शौर्य व साहस का प्रतिक है। राजस्थान अनेक लोक देवियों को पूजा जाता है। जिसमें शीलामाता, आवड़माता, हिगंलाजमाता, जीणामाता, शाकम्भरी माता, नागणेचीमाता, स्वांगिया माता, बिरवड़ी माता तथा करणीमाता आदि प्रमुख है। करणीमाता बीकानेर के राठौड़ वंश की आराध्यदेवी है जिनका मंदिर देशनोक (बीकानेर) नामक स्थल पर स्थित है। इसे चूहों वाली देवी भी कहा जाता है। चारणों की कुलदेवी है चारण जाति का व्यक्ति ही इनका पूजारी होता है। इनकी राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में विशेष आस्था है।

भारतीय भूमंडल में वास करने वाले लोक में शक्ति–पूजा की अति प्राचीन परम्परा दिखाई देती है। भारतीय धर्म एवं दर्शन में भी सच्चिदानंद परात्पर परब्रह्म की मातृ रूप में भी आराधना

सहस्राब्दियों से की जाती रही है। यह आराधना कल्पित आराधना नहीं है। वस्तुतः यहाँ अनन्त अद्‌भुत मातृरूप में शुद्ध सच्चिदानंदमय परात्पर तत्त्व ही स्वयं प्रकट हुए हैं। परब्रह्म की मातृ रूप में उपासना स्वयं में बड़े महत्व की है। पौराणिक एवं लोक मान्यता रही है कि दुर्लभ से दुर्लभ पदार्थों तथा तत्त्वों की उपलब्धि माता की आराधना–उपासना से सहज ही में हो जाती है। राजस्थान में सुदूर अतीत से शक्ति पूजा परम्परा में शक्ति–स्वरूप की दो स्पष्ट धाराएँ प्रवाहमान रही हैं–

- देवी का पौराणिक स्वरूप अर्थात् पौराणिक देवियाँ
- देवी का लोक स्वरूप अर्थात् लोक पूज्य देवियाँ

इस अति समृद्ध परम्परा पर विचार करने पर विदित होता है कि 'स्व' स्वरूप को पहचाने को आकुल और आतुर मनुष्य के लिए शक्ति साधना की प्रवृत्ति अनिवार्यतः एवं स्वाभाविक रूपेण रही है। जैसा कि गीता में कहा गया है कि बिना शक्ति (बल) के आत्मा की उपलब्धि नहीं हो सकती।[1] मेधा के स्तर पर हमारी यह दृढ़ मान्यता रही है कि भगवती शक्ति ही विश्वजननी है। वह विश्व के हित में समय–समय पर जब भी अविद्याजन्य क्लेश बढ़ जाता है तब अपनी श्रेयस्करी एवं क्लेशहारिणी कलाओं को विकसित करती हैं और विश्व व्यापार में अनिष्ट की बाधा को दूर करती हैं।[2] यह संसार शक्ति का ही कार्य है। शक्ति के आविर्भाव से ही तीनों जगत् उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होने पर उनका अभाव हो जाता है।

पौराणिक देवियों के अतिरिक्त लोक देवियों के अवतरण का भी विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण प्रयोजन रहा है। लोकं की यह दृढ़ धारणा रही है कि समाज (लोक) में जब सात्विक वृत्तियाँ लुप्त हो जाती हैं और सामाजिक लोग अर्थ–वैपरीत्य को अपना लक्ष्य बना लेते हैं तब किसी देश या प्रदेश को और कार्य की इयत्ता को अपना लक्ष्य बनाकर कर्मयोग का बोध कराने हेतु ही देवी–शक्ति संसार में अवतरित होती हैं। इस संबंध में पटियाला राज्य के स्टेट हिस्टोरियन ठाकुर किशोरसिंह बार्हस्पत्य का विचार सार अवलोक्य है–सांसारिक नियमों में (परम्परित अनुकरणीय उच्चादर्शों में, श्रेष्ठ नीतियों में, सद्व्यवहार प्रधान नैतिक नियमों अथवा मानवीय मूल्यों में) जब–जब त्रुटि उत्पन्न होती है, तब–तब प्रजाजनों को स्व–कर्तव्यों का बोध कराने हेतु देवी–विभूतियाँ मृत्युलोक में नारी रूप में अवतरित हुआ करती हैं। यह प्रकृति का शाश्वत नियम है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महाशक्ति ने समय–समय पर क्या ब्राह्मण, क्या क्षत्रिय, क्या वैश्य और क्या शूद्र आदि वर्णों एवं विभिन्न जातियों के शाक्तों में अवतार धारण किये हैं।[3] क्योंकि ईश्वरीय शक्ति के नैसर्गिक नियमानुसार मनुष्य मात्र समकक्ष है, समकोटि है। मानव निर्मित जाति–पाँति का भेद तो ढकोसला मात्र है। प्रकृति प्रदेय में कहीं पक्षपात नहीं है। फलतः यह स्वतः सिद्ध है कि जाति नहीं मानवीय गुणों का वैशिष्ट्य एवं प्राधान्य ही मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान करता है। राजस्थान में अवतरित एवं पूजित प्रमुख लोक देवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने से पूर्व इनसे संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों एवं बिन्दुओं पर सम्यक् विचार करना समीचीन एवं आवश्यक प्रतीत होता है।[4]

इन लोक पूजित देवियों में से अधिकांश अवतार मध्यकाल में ही हुए हैं। विश्रृंखल एवं उच्छृंखल होती कुशासन व्यवस्था के पुनः सुव्यवस्थीकरण एवं सुदृढ़ीकरण हेतु ही इन लोक देवियों ने अवतार लिये हैं। राजपूताने के मध्यकाल में जब जब शासकों ने 'राजा रज्जयति प्रजाः[5] के उच्च सिद्धांत को भुलाकर राजा प्रजलुंटकः को अपना ध्येय बना लिया तब तब दैवी शक्ति धर्म–मर्यादा–संस्थापनार्थ एवं प्रजा–रक्षण–प्रयोजनार्थ इस प्रदेश के विभिन्न अंचलों में विविध लोक देवियों के रूप में अवतरित हुई हैं।

जैसा कि लोक परम्परा में प्रचलित इस लोक दोहे से विदित होता है–

आवड़ तूठी भाटियां, कांमेही गोड़ांह
श्री बिरवड़ सिसोदियां, करणी राठौड़ांह

इतिहास साक्षी है कि तत्कालीन प्रजालुंटक शासकों को विस्थापित करने एवं लोक–कल्याणकारी सुशासन व्यवस्था को प्रतिष्ठित करवाने में आवड़ देवी भाटी, कांमेही देवी गौड़, बिरवड़ी देवी सिसोदिया एवं करणी माता राठौड़ शाखा के क्षत्रियों की सहायक रही हैं। इनके कुशल दिशा–निर्देशों एवं वरदानों से उपकृत उक्त सभी शाखाओं के सामाजिकों के साथ–साथ आमजन में भी ये लोक देवियाँ उतने ही आदर एवं श्रद्धा से अद्यावधि पूजित हैं।

राजस्थान में पूजित विविध देवी अवतारों एवं लोक परम्परा प्रचलित उनकी पूजा पद्धतियों का सम्यक् अवलोकन करने से स्पष्टतः विदित होता है कि लोक देवी पूजा पद्धति शास्त्रोक्त पूजा–पद्धति से एकदम भिन्न एवं अलग तरह की रही है। इस प्रदेश में अवतरित विभिन्न लोक देवियों ने स्वयं अपने जीवन काल में भी न तो शास्त्रोक्त शक्ति–सम्प्रदाय के उपासना क्रम (यथा–भैरवी चक्र पूजन पंच मकारोपासना आदि) और न ही बंगालियों एवं मैथिली की भाँति नवरात्रि में मृण्मय मूर्ति, घट स्थापना या बिल्वाभिमंत्रण आदि क्रियाओं के प्रति रुझान प्रकट किया। इन्होंने या तो अपनी आराध्या देवी की उपासना की या फिर प्रतीक स्वरूप त्रिशूल को भूमि पर रोपकर आराधना की तथा आमजन को सत्कर्मों का उपदेश दिया।

यहाँ यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि वर्तमान में कई शहरी मंदिरों में नवरात्रि अथवा चतुर्दशी के अवसर पर शास्त्रोक्त कर्मकाण्डी पूजा होने लगी है पर ठेट सुदूर गाँवों में आज भी सादगी से ही नवरात्रा महोत्सव देवी संबंधी छंदों, चिरजाओं के सुमधुर गायन के साथ सम्पन्न होता है। धन–धान्य के प्रतीक 'जंवारे' अवश्य बोये जाते हैं। ये जंवारे मातृत्व शक्ति सम्पन्न प्रकृति प्रदत्त सर्वोत्कृष्ट सम्पत्ति एवं समृद्धि के सूचक हैं।[6]

इन लोक देवी अवतारों के जीवन चरित्र से संबंधित साहित्य लोक दोहों, लोक गीतों, छंदों एवं चिरजाओं के रूप में प्रभूत मात्रा में लोक कंठ पर सुशोभित है। इस साहित्य में देवी अवतारों के सत्कृत्यों एवं दैविक चमत्कारों का विशद् वर्णन–विवेचन मिलता है। इसी साहित्य में अनेकानेक ऐसी घटनाएँ समाहित हैं, जिनका ऐतिहासिक मूल्यांकन किये जाने पर राजस्थान के सच्चे एवं खरे इतिहास का प्रकाशन संभव होगा। इस साहित्य में भक्ति हृदय की व्याकुलता एवं विनम्रता ने अभिव्यक्ति पाई है तो समय–समय पर भक्तों पर आई विपदाओं के निवारणार्थ की गई

प्रार्थना का स्वर भी प्रस्फुटित हुआ है। प्रजा एवं भक्त सहायतार्थ मातृ–शक्ति द्वारा सम्पन्न अलौकिक एवं चामत्कारिक सत्कृत्यों, अनेक परचों पवाड़ों का भी लोक साहित्य में सम्यक् वर्णन विवेचन हुआ है।[7]

ऐतिहासिक लोक देवी अवतारों के साथ–साथ अनेक ऐसी देवियों की अवधारणा भी लोक परम्परा में दीख पड़ती है, जिसकी लोक मानस के अध्ययन की दृष्टि से विशिष्ट महत्ता है। विविध प्रकार के रोगों से बचने एवं उन रोगों के शमन हेतु ऐसी लोक पूज्य देवियों की मनौतियाँ मानी जाती हैं, एवं पूजा–अर्चना की जाती है। ऐसी देवियों में शीतला माता का सर्वाधिक महत्व है, जो लगभग सम्पूर्ण प्रदेश में चेचक रक्षक देवी के रूप में पूजित है।

लोक मानस ने ऐसी लोक देवियों की परिकल्पना की है, जो तुष्ट होने पर सभी मनोरथ पूरे करती हैं तो रुष्ट होने पर सर्वनाश पर उतारू हो जाती हैं। 'बायाँसा' संज्ञक लोक देवियाँ इसी श्रेणी में परिगणित की जायेंगी। राजस्थान के अधिकांश गाँवों में बायाँसा के थान एवं उनकी बोरड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। लोक की सहज प्रवृत्ति 'भय' इनकी परिकल्पना का प्रमुख आधार कही जा सकती है। विज्ञान के उपचारों के प्रचलन से पूर्व लोक मान्यता यही प्रचलित रही कि किसी के ऊपर से बायाँसा का विमान गुजर जाता है तो वह व्यक्ति लकवा ग्रस्त हो जाता है। यह लकवा बायाँसा के थान की इक्कीस बार फेरी देने से ही ठीक होता है, ऐसी मान्यता रही है।[8]

अन्याय के विरुद्ध पग रोपकर जौहर की ज्वाला में अपने कमनीय कलवेर को भस्मीभूत करने वाली अनेक वीरांगनाएँ भी अपने अपने विशिष्ट अंचलों में लोक देवी के रूप में प्रतिष्ठित एवं पूजित हैं। ऐसी लोक देवियों में तत्कालीन जैसलमेर राज्यान्तर्गत स्थित ग्राम माड़वा की चन्दू बाई का नाम लोक प्रचलित चिरजाओं में बड़ी श्रद्धा से वर्णित हैं, जिन्होंने शासकीय अन्याय के प्रतिरोध स्वरूप जौहर किया।

एक विशेष ध्यान देने योग्य यह तथ्य भी उजागर हुआ है कि कई स्थानों पर कुछ लोक–देवियों के लोक–प्रचलित स्वरूप एवं शास्त्रोक्त पौराणिक देवियों के स्वरूप तथा नाम से अभेद स्थापित हो जाता है। हिंगुळाज एवं नागणेच्यां ऐसी ही देवियाँ हैं जो पौराणिक भी हैं एवं लोक देवी के रूप में भी प्रतिष्ठित–पूजित हैं।[9]

एक ही लोक देवी भिन्न–भिन्न स्थानों, ग्रामों एवं पर्वतों पर अलग–अलग नामों से प्रतिष्ठित एवं पूजित हैं। स्थान विशेष पर घटित घटना की प्रमुखता के कारण ऐसा संभव हुआ है। आठवीं सदी में अपने अद्‌भुत चमत्कारों से लोक–रुचि को हदभाँत प्रेरित प्रभावित करने वाली आवड़ देवी तेमड़ाराय, तन्नोटराय, देगराय, काला डूंगर री राय, भादरिया राय, घंटियालीराय एवं स्वांगिया इत्यादि नामों से अलग–अलग स्थानों में पूजित हैं। यहाँ यह उल्लेख्य है कि आवड़ माता एवं कालान्तर में अवतरित करणी माता आद्या शक्ति स्वरूप हिंगुळाज का ही अवतार मानी गई हैं।[10]

ये देवियाँ मर्यादित शील रक्षण, स्वधर्म पालन, पातिव्रत्य एवं आत्मिक पवित्रता हेतु विकटतम परिस्थितियों का सामना करती रही हैं। यहाँ तक मृत्यु के समक्ष भी कठोर से कठोर अनुष्ठान करती रही हैं। इन लोक–देवी चरित्रों ने बड़े से बड़े राज्यों के अन्यायी राजाओं के

साथ, बलिष्ट से बलिष्ट समूहों के साथ, सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों के साथ अथवा अनीति–अन्याय के प्रत्येक प्रसंग के साथ निर्भय निधड़क होकर संघर्ष किया है, ये जमकर जूझीं हैं पर कदापि पीछे हटने का नाम ही नहीं लिया। तत्कालीन भवसागरीय विपदा प्रदानकारी उत्ताल तरंगों के विकट संकटों को इन्होंने पूरे दम खम से जूझते हुए सहर्ष झेला पर ये स्वयं कभी झुकी नहीं। कष्टों–यातनाओं का अद्वितीय साहस के साथ सामना किया। आज मामूली सी विपत्ति आते ही हायतोबा मचाने वाली, अधैर्यशाली एवं अत्यंत उतावली हो रही युवा पीढ़ी के समक्ष इन लोक देवियों के धैर्य प्रधान जीवन प्रसंगों को उकेर कर ही सामाजिक जीवन–शैली को सुधारा जा सकता है।

राजस्थान में इस्लाम के प्रवेश तथा तुर्क आक्रमणों के कारण राजस्थान के जन–जीवन में एक नवीन परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इस्लामिक संस्कृति के प्रभावों तथा रूढ़िवादीता के कारण लोगों का ध्यान आध्यात्मिक से हटने लगा। इसी कालखण्ड में कुछ ऐसे महान व्यक्तियों एवं महिलाओं का जन्म हुआ जिन्होंने अपने आचरण, आध्यात्मिकता, चमत्कारों एवं दृढ़ता से समाज को एक नई राह दिखाई जिसके कारण वे उन्हें समाज में लोक देवता तथा लोक देवियों का स्थान प्राप्त हआ।[11] उन्हीं में से एक लोक देवी करणी माता है जिनकी राजस्थान मारवाड़ क्षेत्र विशेष मान्यता शक्ति के रूप में है। वर्ष में दो बार चैत्र तथा आश्विन में विशाल मेले लगते हैं।[12]

राजस्थान 1956 से पूर्व अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभाजित था जिन्हें रियासत कहा जाता था। इन रियासतों में से अधिकांश रियासतों में राजपूत शासको का शासन था इसी वजह से इसे जॉर्ज थॉमस ने राजपूताना नाम दिया। राजपूत शासको में शक्ति पूजा की परम्परा विशेष रूप से प्रचलित रही है इसे शाक्त सम्प्रदाय के रूप में जाना जाता है।

राजस्थान में प्रचलित शक्ति पूजा की परम्परा में लोक देवियों की पूजा की परम्परा भी विशेष रूप से प्रचलित रही है। इन्हीं लोक देवियों में से एक प्रमुख आराध्य देवी करणी माता है इन्हें दुर्गा का अवतार माना जाता है। इनका मन्दिर बीकानेर के देशनोक नामक स्थल पर स्थित है अर्थात् राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र का यह एक प्रमुख शक्ति पीठ है जहाँ वर्ष में दो बार चैत्र तथा आश्विन महिने में विशाल मेले लगते है तथा लाखों की संख्या में लोग आते है जो इनकी मान्यता का प्रमुख उदाहरण है।[13]

राजस्थान की लोक देवी करणी माता का जन्म वि.सं. 1444 को सुवाप गाँव में आश्विन शुक्ल सप्तमी के दिन ब्रह्म मुर्हुत में आढ़ी देवल देवी के गर्भ से हुआ जिनके पिता का नाम मेहाजी था जो किनिया शाखा के चारण थे।[14] इनके जन्म के बारे में राजस्थानी लोक साहित्यों में निम्न उल्लेख प्राप्त होता है –

चकलू माढ़ावत री धिन आढ़ी देवल।
जिणरी कुंखे जलमिया, किनियाणी करनल्ल।।
चौदह सो चम्पालवे सातम सुकखार।
आसोज मास उजालपख, आई लियो अवतार।।[15]

करणी माता के बचपन का नाम रिद्धि बाई था। ये 151 वर्ष तक जिंदा रही तथा 23 मार्च 1538 में ज्योतिर्लिन हुई। इन्हें दुर्गा का अवतार माना जाता है। मारवाड़ क्षेत्र में अपने चमत्कारों तथा आध्यात्मिक कार्यों से विशेष प्रसिद्ध प्राप्त कर लोक देवी के रूप में मान्यता प्राप्त की जिसमें पिता को जीवनदान देना, सुवा ब्राह्मण को वरदान, तथा लाखण को जीवनदान दिलाना आदि प्रमुख घटनाऐं हैं।[16]

करणी माता के आशीर्वाद से राव जोधा ने 1459 ई. में जोधपुर की नींव रखी तथा मेहरानगढ़ बनवाया। करणी माता स्वयं जोधपुर गई तथा आशीर्वाद दिया। इसका उल्लेख मुहणोत नैणसी द्वारा रचित ''मारवाड़ा रा परगना री विगत'' ग्रंथ में मिलता है। 1465 ई. में बीकानेर की नींव राव बीका ने राज्य के रूप में रखी जिसमें करणी माता का आशीर्वाद प्रमुख माना गया।[17] इन्हीं कारणों की वजह से आज भी जोधपुर तथा बीकानेर का राठौड़ वंश इन्हें अपनी आराध्यदेव एवं इष्टदेवी मानते हैं तथा पूजते हैं।[18]

मेहरानगढ़ (जोधपुर)

जूनागढ़ (बीकानेर)

करणी माता जन्म मारवाड़ की चारण जाति में हुआ था। उन्हें चारण जाति की कुल देवी कहा जाता है।[19] इनका प्रमुख मंदिर बीकानेर से 30 किमी दूर देशनोक नामक स्थल पर स्थित है जिसकी स्थापना स्वयं करणी माता ने 1419 ई. में की थी। यहीं पर करणी माता ने मंदिर का निर्माण एक जाल वृक्ष के नीचे करवाया। इसे मंड कहा जाता है।[20] कामराज मिर्जा पर जीत के बाद राव जैतसी ने इसके गर्भगृह के चारों ओर संरचना का निर्माण करवाया। वर्तमान स्वरूप बीकानेर के शासक महाराजा गंगासिंह जी द्वारा बनवाया गया। यह मन्दिर हिन्दू मन्दिर स्थापत्य तथा इस्लामिक स्थापत्य कला का मिश्रित रूप है। जहाँ मन्दिर की संरचना हिन्दू मंदिरों के समान है परन्तु मंदिर का शिखर गुम्बद के आकार का है। यह मंदिर सफेद संगमरमर का बना है जिस पर उकेरी गई मूर्तियों को विशेष कलात्मक महत्व है। ये मूर्तियां अत्यंत आकर्षक एवं सुन्दर है।[21] इस मंदिर का प्रमुख दरवाजा चाँदी का बना हुआ है।

करणी माता के मंदिर की प्रमुख विशेषता इसमें विचरण करते लगभग 25000 चूहे हैं जिन्हें 'काबा' कहा जाता है। इन्हें चारण जाति के देपावत वंशजो का पुनर्जन्म माना जाता है अतः इनका इस मन्दिर में विशेष धार्मिक महत्व है। इनमें से कुछ सफेद चूहे है जिन्हें सफेद काबा कहा जाता है। इनके मंदिर में दर्शन का विशेष धार्मिक महत्व है। करणी माता को 'डाढ़ाली डोकरी', करणी जी महाराज, करणी माता, चूहों की देवी आदि नामों से भी जाना जाता है। इनके मन्दिर में प्रमुख पुजारी चारण जाति का व्यक्ति होता है जिसे 'बारीदारी' कहा जाता है।[22]

राजस्थान में करणी माता द्वारा समाज सुधार एवं पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित किये गये कार्यो की वर्तमान में भी प्रासंगिकता है क्योंकि इन्होंने देशनोक में लगभग 42 किमी. क्षेत्र में ओरण की स्थापना की जो पर्यावरण संरक्षण का प्रमुख कार्य है। समाज में पर्दा प्रथा विरोध किया, पुत्र–पुत्री के भेद को मिटाने का प्रयास, सर्व धर्म सम्भाव की स्थापना कर सामाजिक विभेद तथा असमानता को मिटाने का प्रयास किया। गायों की रक्षा तथा निम्नोत्थान का कार्य भी करणी माता ने विशेष रूप से किये जिनकी वर्तमान समाज के लिए भी महत्ती आवश्यकता है।[23]

राजस्थान की जोधपुर एवं बीकानेर रियासतों के अलावा अलवर रियासत के शासकों द्वारा भी करणी माता की पूजा एवं मान्यता का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है। अलवर रियासत के शासक बख्तावर सिंह जी ने 1792 से 1815 में मध्य मन्नत पूरी होने पर बाला किले में करणी माता के मंदिर का निर्माण करवाया तथा पूजा–अर्चना प्रारम्भ की। इस प्रकार राजस्थान के विभिन्न भागों में करणी माता के मंदिर स्थित तथा उनकी शक्ति के रूप में पूजा की जाती है। ये राजस्थान की एक प्रसिद्ध लोक देवी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ।
2. क्र्दा तदावतीयहिं करष्यिामरिसंक्षयम् ।। – दुर्गा सप्तशती

3. साहित्य कोश 3.
4. राजस्थानी सबद कोस–सीताराम लाळस
5. लोक साहित्य विज्ञान–डॉ. सत्येन्द्र
6. लोक साहित्य की भूमिका–कृष्ण देव उपाध्याय
7. करणी चरित्र–ठा. किशोर सिंह बार्हस्पत्य
8. लोक पूज्य देवियाँ–डॉ. भँवरसिंह सामोर
9. राजस्थान की कुल देवियाँ–डॉ. विक्रमसिंह भाटी
10. डॉ. कमलनयन शल्य; राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर, पृ.सं. 29.
11. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 14.
12. डॉ. हुकुम चन्द जैन; राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ.सं. 372.
13. बालकृष्ण राव; राजस्थान में भ्रमण, वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 35–47.
14. डॉ. जी.एच. ओझा; बीकानेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 62.
15. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता के चमत्कार, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 35.
16. मैधेसन सिल्विया ए.; राजस्थान राजाओ की भूमि, वेंडोम प्रेस, 1984, पृ.सं. 129–131.
17. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 40.
18. जनरल, भारत रजिस्ट्रार कार्यालय (1966) भारत की जनगणना–1961.
19. मैक्स, देशनोक करणी माता मंदिर और मध्यकालीन राजस्थान में राजनीतिक वैधता (दक्षिण एशिया : दक्षिण एशियाई अध्ययन जर्नल, 1993).
20. डॉ. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता के चमत्कार, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 35.
21. देशनोक मंदिर की यात्रा व साक्षात्कार।
22. नरेन्द्र सिंह चारण; करणी माता का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ.सं. 95.
23. पत्रिका न्यूज – 18 अक्टूबर 2020, करणी माता का अलवर का इतिहास एवं मान्यता।

☯☯☯